देवी देवताओं के दैनिक पंचोपचार पूजन विधि

आत्म शुद्धि मन्त्र : बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से निम्न मंत्रो के उच्चारण के साथ अपने ऊपर और पूजा सामग्री पर जल छिड़कना चाहिये-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

आचमन मंत्र : निम्न मंत्र पढ़ते हुए तीन बार आचमन करें।

ॐ केशवाय नम:
ॐ नारायणाय नम:
ॐ माधवाय नम:।

फिर यह मंत्र बोलते हुए हाथ धो लें ।

ॐ हृषीकेशाय नम: ।

माथे में तिलक लगाने का मंत्र

ॐ चंदनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम ।
आपदां हरते नित्यं लक्ष्मी: तिष्ठति सर्वदा ॥

निम्न मंत्रो के उच्चारण के साथ माथे में तिलक लगाये।

दैनिक पूजा का संकल्प मंत्र : अब अपने से दाहिने दीपक जलायें एवं हाथमें अक्षत-पुष्प आदि लेकर पूजनका सङ्कल्प करे –

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य (अपना नाम एवं गोत्र बोलें) अहं श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं
श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च (देवी–देवता का नाम) देवस्य [देव्याः] पूजनं करिष्ये।

भगवान का ध्यान : हाथ में जल, अक्षत, फूल लेकर अपने इष्ट देवी देवता का ध्यान करें, फिर निम्न सामग्री अर्पित करें

1. गन्ध (चन्दन) समर्पित करने का मंत्र

"ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दन प्रतिगृह्यताम्।
चन्दन समर्पयामि॥"

चन्दन समर्पित करें। (मानसिक रूप से भी समर्पित कर सकते है)

2. पुष्प समर्पित करने का मंत्र

"ॐ मल्लिकादिसुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयानीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।
पुष्पाणि समर्पयामि॥"

पुष्प समर्पित करें।

3. धूप समर्पित करने का मंत्र

"ॐ वनस्पतिरसोद् भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।
धूपमाघ्रापयामि॥"

धूप जलाकर समर्पित करें।

4. दीप समर्पित करने का मंत्र

"ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽजायत।
श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥"

दीपक जलाकर समर्पित करें।

5. नैवेध्यम् (भोग) समर्पित करने का मंत्र

"ॐ शर्करा खण्ड खाद्यादि दधि क्षीर घृतादिभिः।
आहारै र्भक्ष्यभोज्यैश्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।
नैवेद्यं निवेदयामि॥"

नैवेद्यं समर्पित करें।

"ॐ प्राणाय स्वाहा।
ॐ आपानाय स्वाहा।
ॐ व्यानाय स्वाहा।
ॐ उदानाय स्वाहा।
ॐ समानाय स्वाहा।

प्रत्येक स्वाहा के बाद आचमनी जल समर्पित करें।
घर में संक्षिप्त पूजन के लिये क्रमशः स्तोत्र, अष्टोत्तर शतनाम तथा कवच का पाठ करने के उपरान्त पूजन की समाप्ति पर भगवान को पुष्पांजलि समर्पित करे और प्रदक्षिणा करे।

6. पुष्पांजलि समर्पित करने का मंत्र

"ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे सा्या सन्ति देवाः॥"
"ॐ नानासुगन्धपुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पांजलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वर॥"

पुष्पांजलि समर्पित करें।

7. प्रदक्षिणा करने का मंत्र

"ॐ यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणायाः पदे पदे"

प्रदक्षिणां करें।

क्षमा प्रार्थना मंत्र :

पूजन, जप, हवन आदि में जो गलतियाँ हो गयी हों, उनके लिए हाथ जोड़कर सभी लोग क्षमा प्रार्थना करें।

Disclaimer : विभिन्न शास्त्रोक्त एवं यायावर ज्ञानियों से संकलित जानकारी यहां दी गई है, जिसकी सहमति अमृत कलश एवं संलग्न संस्थाओं एवं व्यक्तियों की नहीं है। सिर्फ जानकारी के लिये उपलब्ध करवाया गया है। किसी भी विधि का परिणाम कर्ता के अपने भक्ति, श्रद्धा, समर्पण एवं विश्वास पे निर्भर है। किसी भी विधि का पालन अपनी समझदारी और विवेक पर करें। किसी भी अच्छे बुरे परिणाम के लिये अमृत कलश, संलग्न संस्थाओं एवं व्यक्तियों की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी तरह का कोई कानूनी प्रक्रिया मान्य नहीं है।

देवी देवताओं के दैनिक पंचोपचार पूजन विधि

ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥
ॐ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं माया देवं परिपूर्ण तदस्तु में ॥

अब आसन के नीचे सामने जल गिरा कर जल बिंदु को प्रणाम कर आसन छोड़ेंए सस्टांग प्रणाम करें

प्रस्तुत कर्ताः

ज्योतिष, हस्तरेखा, वास्तु, यंत्र-मंत्र की अग्रणी संस्था
अमृत कलश

पाखंड और अंधविश्वास से अलग, पूर्णतः मौलिक व वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित
पौराणिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का अनोखा संगम

9836282767, 9748229422, 9123611805

https://astrosociety.in